ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

इस अंक का मूल्य : 5 रु० एक प्रति

वर्ष 46, अंक 16

सोमवार 20, फरवरी 2023 से रविवार 26, फरवरी 2023

विक्रमी सम्वत् 2079 सृष्टि सम्वत् 1960853123

दयानन्दाब्द : 200 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानंद जी की 200 जयंती के विश्वव्यापी कार्यक्रमों का ऐतिहासिक शुभारंभ

सारी दुनिया के लोग जुड़े शुभारंभ समारोह में सभी भारतीय दूतावासों के माध्यम से

भारत सरकार मनाएगी महर्षि की २०० वीं जयंती के आयोजन : नरेंद्र मोदी

लाखों लाख क्रांतिकारियों के प्रेरणा स्रोत थे महर्षि दयानंद : नरेंद्र मोदी

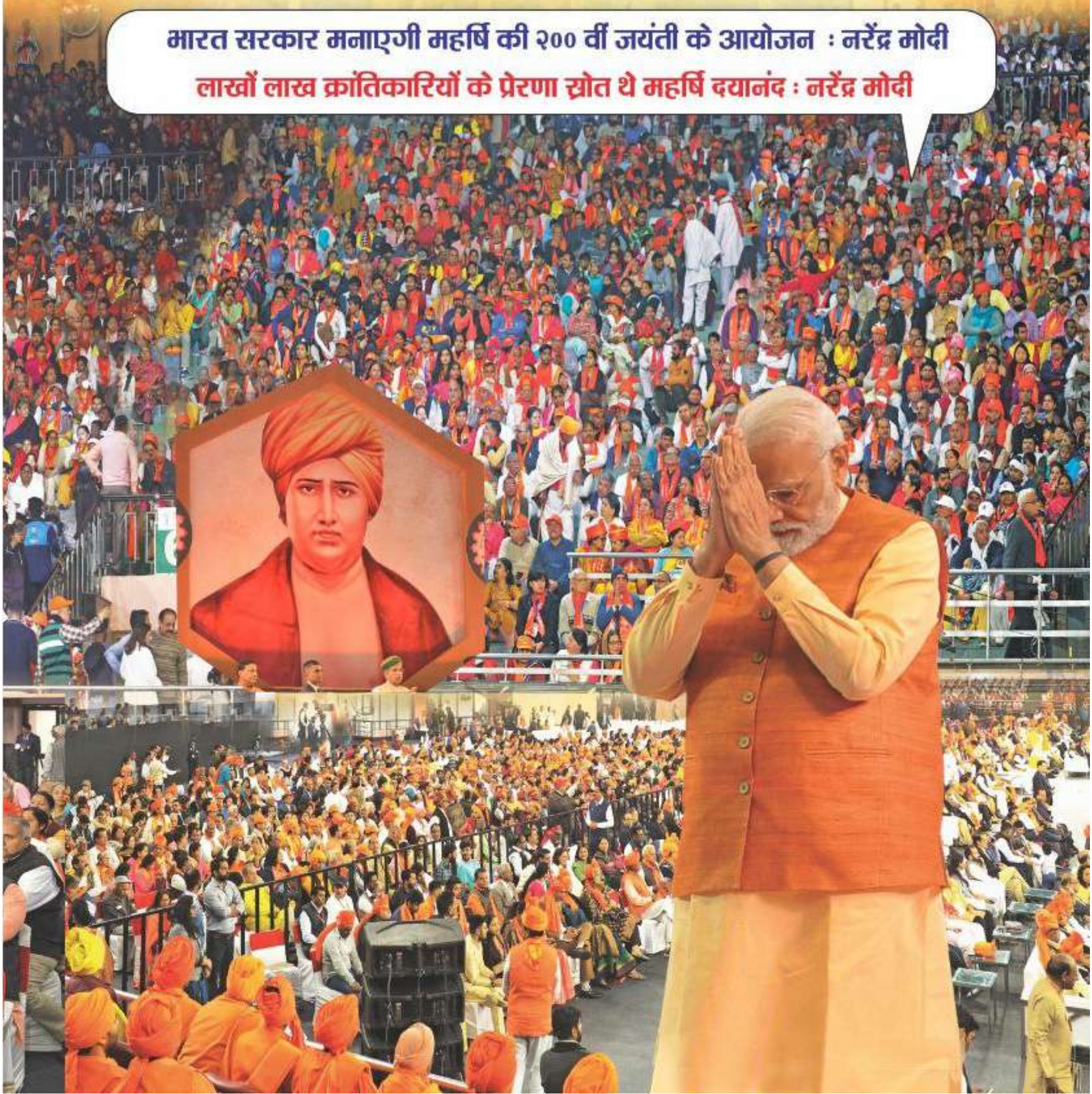

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री, माननीय

श्री नरेन्द्र मोदी जी

का उद्बोधन

महर्षि के अमृत जीवन, उनके अनंत उपकार, समाज सुधार, आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास और उज्जवल भविष्य का सारगर्भित संदेश

कार्यक्रम में उपस्थित गुजरात के राज्यपाल श्रीमान आचार्य देवव्रत जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री सुरेश चंद्र आर्य जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष, श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री विनय आर्य जी, मंत्रिमंडल के मेरे साथी जी किशन रेडडी जी, मीनाक्षी लेखी जी, अर्जुन राम मेघवाल जी, सभी प्रतिनिधि गण, उपस्थित भाइयों और बहनों,

भविष्य के इतिहास को निर्मित करने का अवसर

महर्षि दयानंद जी की २००वीं जन्म जयंती का यह अवसर ऐतिहासिक अवसर है और भविष्य के इतिहास को निर्मित करने का अवसर भी है। यह पूरे विश्व के लिए मानवता के भविष्य के लिए प्रेरणा का पल है, स्वामी दयानंद जी उदघोष था ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' अर्थात हम पूरे विश्व को श्रेष्ठ बनाएं, हम पूरे विश्व में श्रेष्ठ विचारों का, मानवीय आदर्शों का संचार करें। इसलिए २१वीं सदी में आज जब विश्व अनेक विवादों में फंसा हुआ है, हिंसा और अस्थिरता में घिरा हुआ है। तब महर्षि दयानंद सरस्वती जी का दिखाया मार्ग करोड़ों लोगों में आशा का संचार करता है।

मुझे भी यज्ञ में आहुति डालने का अवसर मिला

ऐसे महत्वपूर्ण दौर में आर्य समाज की तरफ से महर्षि दयानंद जी की २००वीं जन्म जयंती का यह पावन कार्यक्रम २ साल चलने वाला है और मुझे खुशी है कि भारत सरकार ने भी इस महोत्सव को मनाने का निर्णय किया है। मानवता के कल्याण के लिए जो यह अविरल साधना चली है, यज्ञ चला है, अभी कुछ समय पहले मुझे भी आहुति डालने का अवसर मिला है।

महर्षि की जन्मभूमि पर जन्म लेना मेरा सौभाग्य

मेरा सौभाग्य है कि जिस पवित्र धरती पर महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने जन्म लिया, उस धरती पर मुझे भी जन्म लेने का सौभाग्य मिला है। उस मिट्टी से मिले संस्कार, उस मट्टी से मिली प्रेरणा आज मुझे भी महर्षि दयानंद सरस्वती के आदर्शों के प्रति आकर्षित करती रहती है। मैं स्वामी दयानंद जी के चरणों में श्रधा पूर्वक नमन करता हूं और आप सभी को हृदय से अनेक-अनेक शुभकामनाएं देता हूं।

महर्षि ने वेदों को पुनर्जीवित किया

साथियों जब महर्षि दयानंद जी का जन्म हुआ था, सदियों की गुलामी से कमजोर पड़कर देश अपनी आभा, अपना तेज, अपना आत्मविश्वास सब कुछ खोता चला जा रहा था, प्रतिपल हमारे संस्कारों, हमारे आदर्शों, हमारे मूल्यों को चूर-चूर करने की लाखों कोशिशें होती रहती थीं, जब किसी समाज में गुलामी की हीन भावना घर कर जाती है तो आस्था की जगह आडंबर आना स्वाभाविक हो जाता है। मनुष्य के भी जीवन में देखते हैं, जिनके भीतर विश्वास कम होता है वे आडंबर के भरोसे जीने की कोशिश करते हैं। ऐसी परिस्थिति में महर्षि दयानंद जी ने आगे आकर वेदों के बोध को मानव समाज के जीवन में पुनर्जीवित किया।

महर्षि नई प्राणशक्ति बनकर आए

भारत के धर्म और परमंपराओं में खामी नहीं थी। खामी तो यह थी कि हम उनके वास्तविक स्वरूप को भूल गए थे और विकृतियों से भर गए थे। आप कल्पना करिए एक ऐसे समय में जब हमारे वेदों के विदेशी भाष्यों को, विदेशी नैरेटिव के गढ़ने की कोशिश की जा रही थी, उन नकली व्याख्याओं के आधार पर हमें नीचा दिखाने की कोशिश थी, हमारे इतिहास को, हमारी आदर्श परंपरा को भ्रष्ट करने के अनेक विध प्रयास चलते थे, तब महर्षि दयानंद के रूप में ये प्रयास बहुत बडी संजीवनी औषधि के रूप में, एक जड़ी बूटी के रूप में समाज में एक नई प्राण शक्ति बनकर आए। महर्षि जी ने सामाजिक भेदभाव, ऊंच-नीच, छुआ-छुत समाज में घर कर गई अनेक विकृतियां, अनेक बुराइयों के खिलाफ एक सशक्त अभियान चलाया, आप कल्पना कीजिए आज किसी बुराई की तरफ कुछ कहना है, अगर मैं आज भी कभी कहता हूं कि कर्तव्य पथ पर चलना ही होगा, तो कुछ लोग मुझे डांटते हैं कि आप कर्त्तव्य की बात करते हो अधिकार की बात नहीं करते हो, अगर २१वीं सदी में मेरा यह हाल है तो डेढ़ सौ, पौने दो सौ साल पहले महर्षि जी को समाज को रास्ता दिखाने में कितनी दिक्कत आई होगी।

महिलाओं के सम्मान के लिए महर्षि ने फूंका था बिगुल

जिन बुराइयों का ठीकरा, धर्म के ऊपर फोड़ा जाता था, स्वामी जी ने उन्हें धर्म के प्रकाश से ही दूर किया। और महात्मा गांधी जी ने एक बहुत बड़ी बात बताई थी और बड़े गर्व के साथ बताई थी, गांधी जी ने कहा था कि हमारे समाज को स्वामी दयानन्द जी की बहुत सारी देन हैं। लेकिन अस्पृश्यता के विरुद्ध घोषणा सबसे बड़ी देन हैं,महिलाओं को लेकर भी समाज में भी जो रूढियां पनप गई थीं, महर्षि दयानंद जी उनके खिलाफ भी एक तार्किक और प्रभावी आवाज बनकर उभरे। महर्षि ने महिलाओं के खिलाफ भेदभाव का खंडन किया, महिला शिक्षा का अभियान शुरू किया और ये बातें २०० साल पहले की हैं, आज भी कई समाज ऐसे हैं जहां बेटियों को शिक्षा और सम्मान से वंचित रहने के लिए मजबूर करते हैं। स्वामी दयानंद जी ने ये बिगुल तब फूंका था जब पश्चिमी देशों में भी महिलाओं के लिए समान अधिकार दूर की बात थी। उस समय की चुनौती का सामना करना असामान्य था। भाईयों और बहनों उस कालखंड में स्वामी दयानंद सरस्वती जी का पदार्पण पूरे युग की

चुनौतियों के सामने उनका उठ करके खड़े हो जाना असामान्य था। इसलिए राष्ट्र की यात्रा में उनकी जीवंत उपस्थिति आर्य समाज के डेढ़ सौ साल होते हों, महर्षि जी के २०० साल होते हों और इतना बड़ा जनसागर सिर्फ यहां नहीं, दुनिया भर में आज इस समारोह में जुड़ा हुआ है। इससे बड़ी जीवन की ऊंचाई क्या हो सकती है।

२०० वर्षों बाद भी महर्षि हमारे दिलों में जिंदा हैं

जीवन जिस प्रकार से दौड़ रहा है, २ साल १० साल के बाद भी जिंदा रहना असंभव होता है, २०० साल के बाद भी महर्षि हमारे बीच में जिंदा हैं। इसलिए भारत जब आजादी का अमृत काल मना रहा है, महर्षि दयानंद जी की २००वीं जन्म जयंती एक पुण्य प्रेरणा लेकर आई है। महर्षि जी ने जो मंत्र तब दिए थे, समाज के लिए जो सपने तब देखे थे, आज उन पर पूरे विश्वास के साथ देश आगे बढ़ रहा है।

महर्षि का आह्वान-वेदों की ओर लौटें

स्वामी जी ने तब आह्वान किया था- वेदों की ओर लोटें, आज देश अत्यंत स्वाभिमान के साथ अपनी विरासत पर गर्व का आहवान कर रहा है। आज देश पूरे आत्मविश्वास के साथ कह रहा है कि हम देश में आधुनिकता लाने के साथ ही अपनी परंपराओं को भी समद्ध करेंगे। विरासत भी, विकास भी, इसी पटरी पर देश नई ऊंचाइयों के लिए दौड़ पड़ा है।

धर्म का पहला अर्थ है- कर्तव्य

साथियों आमतौर पर दुनिया में जब धर्म की बात होती है तो उसका दायरा केवल पूजा पाठ आस्था और उपासना उसकी रीत रस्म उसकी पद्धतियां उसी तक सीमित माना जाता है। लेकिन भारत के संदर्भ में धर्म के अर्थ और निहितार्थ एकदम अलग हैं, वेदों ने धर्म को एक संपूर्ण जीवन पद्धति के रूप में परिभाषित किया है। हमारे यहां धर्म का पहला अर्थ कर्तव्य समझा जाता है, पितृधर्म, मातृधर्म, पुत्रधर्म, देशधर्म, कालधर्म ये हमारी कल्पना है। इसलिए हमारे संतों और ऋषियों की भूमिका भी केवल पूजा और उपासना तक सीमित नहीं रही, उन्होंने राष्ट्र और समाज के हर आयाम की जिम्मेदारी संभाली।

ऋषि-मुनियो की महिमा

उन्होंने हॉलिस्टिक अप्रोच लिया, इंक्लूजिव एप्रोच लिया, इंटीग्रेटेड अप्रोच लिया, हमारे यहां भाषा और व्याकरण के क्षेत्रों को पाणिनी जैसे ऋषियों ने समद्ध किया। योग के क्षेत्र को पतंजलि जैसे ऋषियों ने विस्तार दिया, आप दर्शन में, फिलास्पी में जाएंगे तो पाएंगे कि कपिल जैसे आचार्यों ने बैद्धिकता को नई प्रेरणा दी। नीति और राजनीति में महात्मा विदुर से लेकर के भृतहरि और आचार्य चाणक्य तक कई ऋषि भारत के विचारों को परिभाषित करते रहे। हम गणित की बात करेंगे तो भी भारत का नेतृत्व आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त और भास्कर जैसे गणितज्ञों ने किया। उनकी प्रतिष्ठा एक ऋषि से जरा भी कम नहीं थी। ज्ञान के क्षेत्र में तो कणाद जैसे, चरक और सुश्रुत तक अनगिनत नाम हैं। जब स्वामी दयानन्द जी को देखते हैं तो हमें पता चलता है कि उन परंपराओं को पुनर्जीवित करने में उनकी कितनी बड़ी भूमिका रही है। और उनके भीतर आत्मविश्वास कितना गजब का रहा होगा।

महर्षि ने किया अनेक परोपकारी संस्थाओं का निर्माण

भाइयों और बहनों महर्षि दयानन्द जी ने अपने जीवन में केवल और केवल एक मार्ग ही नहीं बनाया बल्कि उन्होंने अनेक अनेक संस्थाओं का भी सृजन किया। मैं कहूंगा की महर्षि जी अपने जीवन काल में क्रांतिकारी विचारों को लेकर चले, जीए और लोगों को जीने के लिए प्रेरित किया, परोपकारीणी सभा की स्थापना तो महर्षि जी ने खुद की थी। यह संस्था आज भी अपने प्रकाशन और गुरुकुलों की परंपरा को आगे बढ़ा रही है। कुरुक्षेत्र गुरुकुल हो, स्वामी श्रदानन्द ट्रस्ट हो, या महर्षि दयानन्द ट्रस्ट हो, इन सब संस्थाओं ने राष्ट्र के लिए समर्पित कितने ही युवाओं को घड़ा है। इसी तरह स्वामी दयानन्द जी से प्रेरित विभिन संस्थाएं गरीब बच्चों की सेवा के लिए, उनके भविष्य के लिए कार्य कर रही हैं। और ये हमारे संस्कार हैं, हमारी परंपरा है।

महर्षि की प्रेरणा से सेवा करता है आर्य समाज

अभी हम जब टर्की के भूकंप के दृश्य देखते हैं तो बेचैन होते हैं। पीड़ा होती है। मुझे याद है जब २००१ में गुजरात में भूकंप आया, पिछली शताब्दी का भयंकर भूकंप था, उस समय जीवन प्रभात ट्रस्ट के सामाजिक कार्य और राहत बचाव में उसकी भूमिका को मैंने खुद ने देखा है, सब महर्षि जी की प्रेरणा से कार्य करते थे। जो बीज स्वामी जी ने रोपा था वह आज विशाल वट वृक्ष के रूप में पूरी मानवता को छाया दे रहा है।

महर्षि के सुधारों का साक्षी बन रहा देश

साथियों आजादी के अमृतकाल में आज देश उन सुधारों का साक्षी बन रहा है, जो स्वामी दयानन्द जी की भी प्राथमिकताओं में था। आज हम देश में बिना भेद-भाव के नीतियों और प्रयासों को आगे बढ़ते देख रहे हैं। जो गरीब, पिछडा और वंचित है उसकी सेवा देश के लिए पहला यज्ञ है। वंचितों को वरीयता इस मंत्र को लेकर हर गरीब के लिए मकान, उसका सम्मान हर व्यक्ति के लए चिकित्सा आदि की बेहतर सुविध दे रहे हैं। आज देश की बेटियां बिना किसी पाबंदी के रक्षा-सुरक्षा से लेकर स्टार्टप तक देश के निर्माण को गति दे रही है। अब बेटियां सियाचीन में तैनात हो रही हैं और फाइटर प्लेन राफेल भी उड़ा रहीं हैं। हमारी सरकार ने सैनिक स्कूलों में बेटियों के एडमिशन पर जो पाबंदी थी उसे भी हटा दिया। स्वामी दयानन्द ने आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ गुरुकुलों के जरिए भारतीय परिवेश में ढली शिक्षा की भी वकालत की थी। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के जरिए देश ने अब इसकी भी बुनियाद मजबूत की है।

महर्षि का जीवन चुनौतियों का समाधान देता है

साथियों स्वामी दयानन्द जी ने हमें जीवन जीने का एक ओर मंत्र दिया था। स्वामी जी ने बहुत ही सरल शब्दों में बताया था कि आखिर परिपक्व कौन होता है? आप किसको परिपक्व कहेंगे? स्वामी जी का कहना था जो व्यक्ति सबसे कम ग्रहण करता है और सबसे अधिक योगदान देता है, वही परिपक्व है। आप कल्पना कर सकते हैं, कितनी सरलता से उन्होंने कितनी गंभीर बात कह दी थी। उनके ये जीवन मंत्र कितनी ही चुनौतियों का समाधान देता है। इसे पर्यावरण के क्षेत्र में भी देखा जाता है।

वेदों में हैं प्रकृति और पर्यावरण के सूक्त

उस सदी में जब ग्लोबल वार्मिंग, क्लाइमेट चेंज ऐसी समस्याओं ने तो जन्म भी नहीं लिया था, उसके लिए तो कोई सोच भी नहीं सकता था। महर्षि जी के मन में ये बोध कहां से आया, इसका उत्तर है हमारे वेद, हमारी ऋचाएं सबसे पुरातन माने जाने वाले वेदों में कितने ही सूक्त प्रकृति और पर्यावरण को समर्पित हैं। महर्षि जी ने वेदों के उस ज्ञान को गहराई से समझा था। उनके सार्वभौमिक संदेशो को उन्होंने अपने कालखंड में विस्तार दिया था। महर्षि वेदों के शिष्य थे और ज्ञान मार्ग संत थे। इसलिए उनका बोध उनके समय से बहुत आगे का था।

महर्षि का दिखाया मार्ग समाधान प्रस्तुत करता है

भाइयों और बहनों आज जब दुनिया डेवलैपमेंट की बात कर रही है, तो महर्षि का दिखाया मार्ग महर्षि के प्राचीन जीवन दर्शन को विश्व के सामने रखता है।, समाधान का रास्ता प्रस्तुत करता है। पर्यावरण के क्षेत्र में भारत आज विश्व के लिए एक पथ प्रदर्शक की भूमिका निभा रहा है। हमने प्रकृति के सम्बन्ध के इसी विजन के ग्लोबल मिशन, लाईफ, ;एल.आई.एफ.ई. अर्थात लाईफ इस्टाइल आफ इनवायरमेंट, एक लाइफ स्टाइल इनवायरमेंट की शुरूआत भी की है। हमारे लिए गर्व की बात है कि इस महत्वपूर्ण दौर में दुनिया के देशों ने जी-२० की जिम्मेदारी भी भारत को सौंपी है।

प्रधानमंत्री जी रिमोट का बटन दबाकर

प्राकृतिक गऊ आधरित खेती को गांवो में लेकर जाएं

हम पर्यावरण को जी-२० के ऐजेण्डे के रूप में आगे बढ़ा रहे हैं। देश के इन महत्वपूर्ण अभियानों में आर्य समाज एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। आप हमारे प्राचीन दर्शन के साथ आधुनिक परिप्रेक्ष्यों में और कर्त्तव्यों से जन-जन को जोड़ने की जिम्मेदारी आसानी से उठा सकते हैं। इस समय देश और जैसा आचार्य जी ने वर्णन किया और आचार्य जी तो उसके लिए बड़े समर्पित हैं। प्राकृतिक खेती से जुड़ा व्यापक अभियान हमें गांव-गांव पहुंचाना है। प्राकृतिक खेती, गऊ आधारित खेती हमें इसे फिर से गांव-गांव में लेकर जाना है। मैं चाहूंगा कि आर्य समाज के यज्ञों में एक आहुति इसके लिए भी डाली जाए।

मोटे अनाज ;श्री अन्न का यज्ञ और आहार में करें प्रयोग

ऐसा ही एक और वैश्विक आहवान भारत में मिलिट मोटे अनाज बाजरा-ज्वार जिनसे हम परिचित हैं, और मिलिट को हमने विश्व की पहचान बनाने के लिए एक नया नामकरण किया है। हमने कहा है मिलैट को श्री अन्न। इस वर्ष पूरा राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय मिलैट दिवस मना रहा है। और हम तो जानते हैं, हम तो यज्ञीय संस्कृति के लोग हैं, और हम यज्ञों में आहुति में जो सर्वश्रेष्ठ अन्न हैं, जौं की आहुति देते हैं। हमारे यहां यज्ञों में जौं जैसे मोटे अनाज या श्री अन्न की हअम भूमिका होती है। क्योंकि हम यज्ञों में वह इस्तेमाल करते हैं जो हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ होता है। इसलिए यज्ञ के साथ-साथ सभी मोटे अनाज श्री अन्न से देशवासियों के जीवन और आहार को ज्यादा से ज्यादा जोडें। अपने नित्य आहार में उसे हिस्सा बनाएं। इसके लिए हमें नई पीढ़ी को भी जागृत करना चाहिए। और आप इस काम को आसानी से कर सकते हैं।

महर्षि ने सवतंत्रता सेनानियों के भीतर राष्ट्र प्रेम की लौ जलाई थी

भाइयों और बहनों महर्षि दयानन्द से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। उन्होंने स्वतंत्रता सेनानियों के भीतर राष्ट्रप्रेम की लौ जलाई थी। कहते हैं कि एक अंग्रेज अफसर महर्षि से मिलने आया और उनसे कहा कि भारत में अंग्रेजी राज के सदा बने रहने की प्रार्थना करें, स्वामी जी का निर्भीक जवाब था, आंख में आंख मिलाकर उन्होंने अंग्रेज अफसर को कह दिया था, स्वाधीनता मेरी आत्मा है और भारत वर्ष की आवाज है और यही मुझे प्रिय है, मैं विदेशी साम्राज्य के लिए कभी प्रार्थना नहीं कर सकता। अनगिनत महापुरुष जिनमें लोकमान्य तिलक, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, वीर सावरकर, लाला लाजपतराय, लाला हरदयाल, श्यामजी कृष्ण वर्मा, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल लाखों लाख स्वतंत्रता सेनानी और क्रांतिकारी महर्षि जी से प्रेरित थे।

महर्षि की प्रेरणा की विरासत

महर्षि दयानन्द जी, दयानन्द ऐंग्लो वैदिक विद्यालय शुरू करने वाले महात्मा हंसराज जी हों, गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द जी हों, भाई परमानन्द जी हों, ऐसे कितने ही देवतुल्य व्यक्तियों ने स्वामी दयानन्द से ही प्रेरणा पाई थी। आर्य समाज के महर्षि दयानन्द जी उन सभी प्रेरणाओं की विरासत है।

आर्य समाज से देश को अपेक्षाएं हैं

आपको वह सामर्थ्य विरासत में मिला हुआ है, इसलिए देश को भी आपसे बहुत अपेक्षाएं हैं, आर्य समाज के एक-एक आर्यवीर से अपेक्षा करता है, मुझे विश्वास है आर्य समाज राष्ट्र एवं समाज के प्रति इन कर्त्तव्य यज्ञों को करता रहेगा, यज्ञ का प्रकाश मानवता के लिए प्रकाशित करता रहेगा, अगले वर्ष आर्य समाज की स्थापना का १५०वां वर्ष भी आरंभ होने जा रहा है। ये दोनों अवसर महत्वपूर्ण अवसर हैं। अभी आचार्य जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी बलिदान के १०० वर्ष की बात की। मतलब तीन वर्षों की त्रिवेणी की बात हो गई।

महर्षि जहर पीकर भी अमृत देकर गए

महर्षि दयानन्द जी स्वयं ज्ञान की ज्योति थे। हम सब भी ज्ञान की ज्योति बनें, जिन आदर्शों और मूल्यों के लिए वे जिए, जिन आदर्शों और मूल्यों के लिए उन्होंने जीवन खपाया और महर्षि जहर पीकर के हमारे लिए अमृत देकर गए हैं। आने वाले अमृतकाल में वह अमृत हमें मां भारती के कोटी-कोटी मानवों के कल्याण के लिए शक्ति दे, सामर्थ्य दे।

कार्यक्रम की प्लानिंग, मैनेजमेंट और एग्जीक्यूसन के लिए अभिनन्दन

मैं आर्य प्रतिनिधि सभा के भी सभी महानुभावों का भी अभिनंदन करता हूं, जिस प्रकार से आज के कार्यक्रम को प्लान किया गया, मुझे आकर १०-१५ मिनट देखने का अवसर मिला, मै मानता हूं, प्लानिंग, मैनेजमेंट, एग्जीविशन आदि हर प्रकार से उत्तम आयोजन के लिए आप सब अभिनंदन के अधिकारी हैं। बहुत-बहुत शुभकामनाएं बहुत-बहुत धन्यवाद।

प्रधानमंत्री जी हाथ हिलाकर अभिन्दन करते हुए

200वीं
सदैव सत्य
महर्षि दयानन्द सरस्वती
जयन्ती
1824-2024

आर्य समाज के सेवा कार्यो
की प्रशंसा करते हुए

प्रधानमंत्री जी का उद्बोधान

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के दो वर्षीय आयोजनों के शुभारंभ समारोह, 12 फरवरी 2023 के भव्य आयोजन की सफलता हेतु समस्त संस्थाओं एवं विशिष्ट महानुभावों का हार्दिक आभार!

संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के समस्त अधिकारियों सहित श्री जी.किशन रेडडी जी, केंद्रीय मंत्री, संस्कृति, पर्यटन और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्रालय, श्रीमती मीनाक्षी लेखी जी, केंद्रीय राज्यमंत्री, संस्कृति और विदेश मंत्रालय, श्री अर्जुनराम मेघवाल जी, केंद्रीय राज्यमंत्री, संस्कृति और संसदीय कार्य मंत्रालय, आप सभी महानुभावों का मार्गदर्शन और उपस्तिथि कार्यक्रम की सफलता में महत्वपूर्ण रही। इसके लिए आर्य समाज की ओर से हार्दिक आभार

संपूर्ण भारत के आर्य समाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, गुरुकुलों, कन्या गुरुकुलों, आर्य विद्यालयों, अनाथालयों और समस्त अधिकारी, कार्यकर्ताओं, सदस्यों का अभूतपूर्व योगदान देने हेतु आभार।

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान श्री भुवनेश खोसला जी, अमेरिका से दो दिन के लिए केवल इस समारोह के लिए ही पधारे, जबकि वें एक सप्ताह पहले ही भारत से अमेरिका गए थे, उनके साथ श्री रणवीर जी भी पधारे और योगदान दिया । म्यांमार से श्री खेत्रपाल जी और अन्य देशों से भी आर्य अधिकारी पधारें आप सभी का हार्दिक धन्यवाद

माननीय प्रधानमंत्री जी यज्ञ में आहुति देते हुए

धर्मपाल आर्य जी पीत वस्त्र द्वारा स्वागत करते हुए

आचार्य देवव्रत जी एवं सुरेन्द्र कुमार आर्य जी स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए

आचार्य देवव्रत जी प्रधानमंत्री जी को सम्मान पत्र भेंट करते हुए

सुरेश चन्द्र आर्य जी प्रधानमंत्री जी से हाथ मिलाकर स्वागत करते हुए

प्रधानमंत्री जी से हाथ मिलाकर स्वामी धर्मानन्द जी साथ में आचार्या नीरजा जी और धर्मपाल आर्य

माननीय प्रधानमंत्री जी प्रज्ज्वलित मशाल प्रदान करते हुए

आर्य विद्यालय, आर्य वीरदल, वीरांगना दल के बच्चों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रमों के विहंगम दृश्य

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 20 फरवरी, 2023 से रविवार 26 फरवरी, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने का दिनांक 22/24 फरवरी, 2023 (बुध-वीर- शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 22 फरवरी, 2023

200वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024 सदैव सत्य

• स्टेडियम में उमड़ा आर्य समाज का जनसैलाब, • 7 बजे ही स्टेडियम के गेट पर लग गया था भीड़ का ताँता • 500 बसों, सैकड़ों कारों, लोकल बसों और मैट्रो से 30 हजार से अधिक लोग 9 बजे तक पहुँच गये थे • 10: 30 बजे सुरक्षा की दृष्टी से द्वार बंद होने पर भी बहुत से लोग अंत तक पहुँचते रहे • पगड़ी और पीत वस्त्रों से सुसज्जित थे सभी आर्यजन • सेवा प्रकल्पों को देख अभिभूत हुए प्रधानमंत्री • सारी व्यवस्थाएं रही आदर्श, प्रधानमंत्री जी का हृदय स्पर्शी उद्बोधन रहा विशेष प्रेरणाप्रद आकर्षण

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट पिंटर्स, युनिट न.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-90 से से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह